ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

आर्थिक उन्नयन और विकास में शिक्षा की भूमिका व महत्व का अध्ययन

Study of The Role and Importance of Education in Economic Development and Development

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 21/12/2021, Date of Publication: 22/12/2021

पूजा त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक,
बी0एड0 विभाग,
स्वामी विवेकानंद कॉलेज आफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, गौलापार,
हल्द्वानी, उतराखंड, भारत

सारांश

"किसी भी राष्ट्र का विकास उसके नागरिको के बीच शिक्षा के प्रसार से होता है " वही आर्थिक विकास श्रमिको की कार्यकुशलता पर निर्भर करता है, अर्थात शिक्षा हमारे आर्थिक विकास का अभिन्न अंग बन गयी है, स्कूली शिक्षा में 1ः तक की वृद्धि भी आर्थिक वृद्धि को 6% से 15% तक बढ़ा सकती है, मानव पूँजी को तैयार करने का सबसे प्रभावशाली शस्त्र शिक्षा है, एक अनुमान के अनुसार 1948-49 से 1968-69 तक प्रति व्यक्ति उत्पादकता बढ़ाने में शिक्षा का योगदान 14% के आस-पास था जो बाद के वर्षो में बढकर 35% हो गया, सामान्यतः यह पाया गया है की उन समृद्ध देशो में जहॉ प्रति व्यक्ति आय 500 डॉलर से अधिक है वहॉ साक्षरता दर 90% से भी अधिक है, जबकि उन गरीब देशो में जहॉ प्रति व्यक्ति आय 200 डॉलर से कम है साक्षरता दर 30% से भी कम है।

"The development of any nation is done by the spread of education among its citizens." The same economic development depends on the efficiency of the workers, that is, education has become an integral part of our economic development. Even an increase of 1% in school education can increase economic growth from 6% to 15%, the most effective weapon for creating human capital is education, according to an estimate in increasing per capita productivity from 1948–49 to 1968–69. The contribution of education was around 14% Which increased to 35% in subsequent years, it is generally found that in those rich countries where per capita income is more than $ 500, the literacy rate is more than 90%, whereas in those poor countries where per capita income is 200 Less than a dollar Literacy rate is less than 30%.

मुख्य शब्द: शैक्षिक विकास, उन्नयन, आर्थिक विकास, शैक्षिक योगदान।
Keywords: Educational Development, Upgradation, Economic Development, Educational Contribution.

प्रस्तावना

भारत सरकार ने वर्ष 2024 तक सकल नामांकन अनुपात (GER)को 40%तक बढ़ाने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है, जहॉ एक और वर्तमान में देश का (GER) लगभग25% है, वही दूसरी और जातिगत आकडो की बात करें तो SC के लिए यह21.8% और ST के लिए यह 15.9% है, यदि भारत की तुलना वैश्विक स्तर पर की जाये तो भारत का प्रदर्शन काफी निराशाजनक रहा है, ब्रिक्स राष्ट्रांे की बात करे तो रूस में ळम्त् 81.8% , ब्राजील में 50.5% और चीन में 50.0% रही मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अगले वर्षो में इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए 30,338 करोड़ रूपये का निवेश करने का प्रस्ताव किया है, शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट (2019-20) के अनुसार भारत में कॉलेजो की संख्या 42343 रही जिसमे से ग्रामीण क्षेत्र में कॉलेजो की संख्या 60.56% है और 10.75% कॉलेज केवल महिलाओ के लिए है, शिक्षको की संख्या 1503156, व साक्षरता दर की बात करे तो पुरूषों की संख्या 82.1% तथा महिलाओं की संख्या 65.4% रही।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन।

शिक्षा का आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान

यू- डीआईएसई $2018-19 के अनुसार, 9.72 लाख से अधिक सरकारी प्रारंभिक स्कूल के प्रत्यक्ष आधारभूत सुविधाओ में सुधार हुआ है, हालॉकि भारत ने प्राथमिक विधालय स्तर पर लगभग 96% साक्षरता स्तर प्राप्त किया है लेकिन फिर भी हम 100% साक्षरता हासिल करने में पीछे है, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एन एस एस) के अनुसार, अखिल भारतीय स्तर पर 7 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की साक्षरता 77% थी,

नेशनल सेण्टर फॉर एजुकेशन रिसर्च स्टेटिस्टिक्स की 2019 की रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में अंग्रेजी साक्षरता 79% है, व 21% अमेरिकी वयस्क, निरिक्षर या कार्यात्मक रूप से निरक्षर है, अमेरिकी शिक्षा विभाग के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका में 54% व्यस्कों की साक्षरता 6वी कक्षा के स्तर से नीचे है, वही यदि बात भारत की करी जाए तो भारत की जनगणना ने 2011 में औसत साक्षरता

दर 73% होने का अनुमान लगाया, जबकि राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग ने 2017-18 में साक्षरता का सर्वेक्षण 77.7% किया, शहरी क्षेत्र में साक्षरता दर 73.5% के साथ ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में 87% अधिक थी, अमेरिका में महिला साक्षरता के आॅकड़ो को देखे तो वर्ष 2020-21 में अमेरिका में महिलाओं द्वारा अर्जित, कॉलेज डिग्री का प्रतिशत स्नातक में 57.7%, स्नात्तकोत्तर में 60.7% रहा है और 2021 में अमेरिका की साक्षरता दर 99% है जिसमे 99.50% पुरूष साक्षरता व 98.50% महिलायें साक्षर है, तथा 2021 में भारत की साक्षरता दर 77.7% रही जिसमें 85ः पुरूष व 71% महिलायें साक्षर है, वही अमेरिका की अर्थव्यवस्था को देखे तो इसके पास 2021 में दुनिया का 7वॉ उच्चतम प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (पीपीपी) है वही वर्ष 2017 में, भारत द्वारा पीपीपी के आधार पर तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी वैश्विक स्थिति को बनाये रखा गया था, जो क्रमशः चीन (16.4%), अमेरिका (16.3%) की तुलना में पीपीपी के लिहाज से वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 6.7% रहा था, 130 करोड लोगो की जनसंख्या वाला भारत देश जिसमे 70% संख्या भावी युवा वर्ग को यदि शिक्षा की सीढ़ी से आगे ले जाये तो उसके श्रम, शोध, चातुर्यता के द्वारा देश की अर्थव्यवस्था में एक क्रांति लायी जा सकती है, वर्ष 2018 में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट में कहा गया की 15-18 वर्ष की लगभग 39.4% लड़कियाँ स्कूली शिक्षा हेतु किसी भी संस्थान में पंजीकृत नही है और इनमे से अधिकतर या तो घरेलू कार्यो में संलग्न है या भीख मॉगने जैसे कार्यो में लगे है, आॅकडे यह भी बताते है की भारत में अभी भी लगभग 145 मिलियन महिलायें है जो पढ़ने लिखने में असमर्थ है अर्थात भारत की 100 में से 29 महिलायें निरक्षर है, तथा भारत की अर्थव्यवस्था सकल घरेलू उत्पाद के स्तर पर प्रति डॉलर के मुकाबले भारतीय रूपये की क्रय शक्ति समानता वर्ष 2017 में 20.65 है जो वर्ष 2011 में 15.55 रही थी, यूनेस्को साक्षरता दर 2015 द्वारा जारी देशो की सूची के अनुसार भारत में 15-25 उम्र के युवाओं की साक्षरता दर 91.66%, चीन की युवा साक्षरता दर 99.7% , व पाकिस्तान की युवा साक्षरता दर 80.35% थी, जबकि उन गरीब देशो में जिनकी प्रति व्यक्ति आय 200 डॉलर से भी कम है, वहॉ की साक्षरता दर 30ः से भी कम है, प्रति व्यक्ति आय का साक्षरता दर की 30-40 की रेंज से कोई सम्बन्ध नही है, इसी द्वष्टिकोण में थोडा परिवर्तन करके कुछ देशो जैसे-इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, व जर्मनी में अंतकाल सूचक सहसंबंध निकाला गया “एंड सन ” ने इन देशो के अनुभवों की परीक्षा की तथा वह इस निष्कर्ष पर पहुॅचा की 40% साक्षरता स्तर एक सीमा है जिसके नीचे 8,40,000 स्कूल तथा 1000 विश्वविधालय, 38,498 कॉलेज है, तो वही अमेरिका में वर्तमान समय में 1,30,000 स्कूल, 5300$ विश्वविधालय व कॉलेज है, यदि इन देशो की अर्थव्यवस्था को देखे तो पूरे विश्व की 80 ट्रिलियन डॉलर वाली जीडीपी का 27ः (21.43 ट्रिलियन) अमेरिका के पास है तो वही 3.5% मात्र भारत के पास है, आज अमेरिका की इतनी बड़ी जीडीपी होने के कारण क्या है ? आज भारत को जरूरत है कि वह अपने देश के शत-प्रतिशत नागरिकों को व्यावसायिक शिक्षा दे ताकि भारत का प्रत्येक नागरिक आत्मनिर्भर बनकर देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे, और विदेशी कम्पनियों के भारत में प्रवेश पर कमी आये, औटोनोमस अस्सेस्मेंट सर्वे इवैल्यूएशन एंड रिसर्च (।ैम्त्) की रिपोर्ट के अनुसार 83% शिक्षित लोग भारत में बेरोजगार है, क्योंकि आज भी कई सारे बदलाव के बाद भी भारत की शिक्षा केवल ऐसे नागरिको को तैयार करने में जोर देती है जो या तो सरकार के काम आ सके या किसी बडे संगठन के लिए काम कर सके वही हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड, व्हार्टन जैसे विदेशी विश्वविधालय में प्रॉब्लम सोल्विंग, प्रोजेक्ट, केस स्टडीज जैसी शिक्षा पर बल दिया जाता है और यहॉ से निकले छात्र देश की अर्थव्यवस्था में अपना 100% योगदान देते है जिससे देश की जीडीपी में व्रि्द्ध होती है, यदि बात सुन्दर पिचाई जैसे भारतीयों की करे तो इन्होने भी अपनी शिक्षा भारत से बाहर जा कर ही पूरी की, अन्तराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार विश्व की लगभग 60% आबादी अनौपचारिक क्षेत्र से सम्बंध है, ओक्सफेम की नवीनतम वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2020 में अपनी नौकरी गवाने वाले कुल 122 मिलियन लोगो में से 75% अनौपचारिक क्षेत्र से सम्बंधित थे, जिसके चलते चालू वित्त वर्ष 2020-21 में अर्थव्यवस्था के 7.7% सिकुड़ने का अनुमान है, इसलिए रोजगार सर्जन कर अर्थव्यवस्था को तत्त्काल पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए भारत को शिक्षा में निवेश करना होगा,

निष्कर्ष

शिक्षा वर्तमान समय में वास्तव में आधुनिकरण कि कुॅजी है तथा ऐसा समाज या देश जिसके नागरिको ने शिक्षा रूपी आभूषण को धारण किया हो वह अपनी देश की अर्थव्यवस्था में निश्चित रूप से क्रांति ला सकते है, यूरोप, अमेरिका जैसे विकसित देशो की आर्थिक प्रगति वहॉ के आधुनिक कुशलता व विज्ञान की जानकारी से पूर्ण श्रमशक्ति के निर्माण के कारण है, जापान, नीदरलैंड, तथा स्विजरलैंड जैसे अनेक देशो का स्वानुभव यह बताता है की, जिस देश के पास एक उच्च कुशल श्रमशक्ति हे वह देश बिना अधिक संशाधनो के भी ऊॅचा स्तर प्राप्त कर सकता है, अतः अब ये स्वीकार कर लिया गया है कि विकासशील देशो में एक सीमा तक पूंजी निर्माण के अन्य तरीको की अपेक्षा मानव संशाधन पर निवेश करना अधिक उपयोगी व लाभदायक साबित होता है, संक्षेप में, आर्थिक विकास में शिक्षा के योगदान का आकलन करने पर पता चलता है कि शैक्षिक क्रिया के समस्त सूचकांक व आर्थिक क्रिया के सूचकांक में परस्पर सहसंबंध है,

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, (**2006%**): " भारत में उच्च शिक्षा " ,बदलाव की जरूरत, अंतराष्ट्रीय संबंधो पर शोध के लिए भारतीय परिषद.*
2. *भार्गवा, (**2006%**): " ज्ञान और राष्ट्रीय विकास " बदलाव छन्म्ज्। द्वारा आयोजित शिक्षा आयोग पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया पेपर .*
3. *दत्ता तथा सुन्दरम (**2007%**): " भारतीय अर्थव्यवस्था " गौरवदत्ता और अश्वनी महाजन, एस. चंद एंड कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली .*
4. *गुप्ता, आशा (**2005%**): " भारतीय परिद्रश्य पर उच्च शिक्षा में अन्तराष्ट्रीय रूझान ".*
5. *पटेल, आई जी (**2003%**): " उच्च शिक्षा और आर्थिक विकास " राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय दृष्टिकोण.*
6. *विश्वविधालय अनुदान आयोग (UGC) (विभिन्न वर्षो से)वार्षिक रिपोर्ट, UGC, नई-दिल्ली.*
7. *Radhakrishnan P, Akila R Progress towards education for all: the case of Tamil Nadu NIEPA New Delhi*
8. *1996 Evaluation of the scheme of vocationalisation of secondary education. All India Report ORG New Delhi*

Website

1. *https://www.schoolofeconomics.net*
2. *https://www.sarkariguider.com*
3. *https://www.essaysinhindi.com*
4. *https://www.drishtiias.com*